© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 3 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology
DOI : https://doi.org/10.32628/IJSRST

प्रवासी कहानियाँ : देश- विदेश का द्वंद्व और स्त्री पुरुष संबंध

डॉ. नीलम

हिन्दी विभाग लक्ष्मीबाई, कॉलेज, अशोक विहार

प्रवासी शब्द आते ही लोगों के मन में एक प्रश्न उठता है कि यह तो अपना देश छोड़कर चले गए हैं और वहीं के होकर रह गए हैं ।ये अपने हैं या पराये । इन्होंने दूसरे देश में जाकर वहां की संस्कृति और सभ्यता को अपना लिया है ,और यहां की संस्कृति और सभ्यता को भूल गए हैं ।ये खूब खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहे हैं । इन सब विषयों पर खूब बहस हो रही है। उनके इन्हीं बाह्य जीवन का ही आकलन लोग लगाते हैं ,जबकि सच्चाई कहीं अलग होती है ।जब हम बारीकी से इन विषयों की जांच पड़ताल करते हैं तो पाते हैं कि उनके अंदर आत्म और परिवेश का द्वंद्व चलता रहता है । भारतीय संस्कृति को न छोड़ने तथा विदेशी संस्कृति को पूरी तरह से न अपना पाने की पीड़ा हमेशा चलती रहती है। अपने देश को छोड़कर गए हुए लोगों की पीड़ा दुख दर्द अपनी जमीन से कटने का कष्ट आदि विषयों को हम प्रवासी साहित्य के माध्यम से देख सकते हैं।

प्रवासी साहित्य सोच के नए आयाम को प्रस्तुत करता है। जिस तरह से दलित साहित्य और स्त्री साहित्य को पढ़ने के बाद उनके दर्द और पीड़ा का सही रूप में अंदाजा लगाया जा सकता है ।इसी तरह से प्रवासी साहित्य को पढ़ने के बाद ही हमें वहां की सच्चाई का पतालगता है कि वहां के लोगों की क्या पीड़ा और क्या कष्ट हैं। अपने देश से गए हुए लोगों के जीवन की सच्चाई का पता प्रवासी साहित्य के माध्यम से होता है।

इस धरती पर जितने भी प्राणी है चाहे इंसान हो, चाहे जानवर उनका दो सच्चाइयों से सामना जरूर होता है एक तो मृत्यु दूसरा सेक्स । लेकिन इंसान इस सच्चाई से दूर भागता है। सेक्स जीवन का सबसे बड़ा सत्य है और भारतीय इंसान उसमें डूबते हुए भी इस सत्य से इनकार करता है और परंपरा, सभ्यता, नैतिकता का आवरण ओढ़ कर इसे दूर भागता है अथवा छिपाता है ।,पुरुष यह समझते हैं की सेक्स की भूख सिर्फ पुरुष को होती है स्त्री को नहीं होती । जो सच से बिल्कुल परे हैं । पुरुष की तरह स्त्री को भी सेक्स संतुष्टि का अधिकार है । कहानीकार तेजेंद्र शर्मा ने स्त्री के इसी मनोविज्ञान को समझते हुए 'कल फिर आना' कहानी में स्त्री की मनोदशा तथा पुरुष मानसिकता पर बहुत ही बारीकी से कलम चलाते हुए स्त्री की उन अंतरंग सच्चाइयों को उजागर करते हैं जिसे स्त्री हमेशा अपने मन में दबा कर रखती हैं । सेक्स से पति द्वारा संतुष्ट न होने पर भी समाज और परिवार के डर तथा नैतिकता के चलते वह अपने इस प्रकृति प्रदत्त सेक्स इच्छा को दबाकर रखती है। लेकिन 'कल फिर आना 'की नायिका सारे नैतिकता को तोड़ते हुए जीवन के एक नए आयाम को खोलती है । अपने ही बलात्कारी से सेक्स में संतुष्ट होने के बाद वह उससे आग्रह करती है कि कल फिर आना।' इस कहानी में लेखक ने पुरुष मानसिकता को तार तार करते हुए कहा है 'देखो रीमा मैं अब 50 साल का हो चला हूं। मेरे लिए अब औरत के जिस्म का कोई मतलब नहीं रह गया है। अब तुम मुझसे कोई उम्मीद ना रखना।'....

कबीर के ये शब्द रीमा के दिल की धड़कन को गड़बड़ा देने के लिए काफी थे। कुछ पल के बाद उसने बोला ...कबीर आप 50 के हो गए तो मेरा क्या कसूर ? मैं तो अभी 37 की हूं.... आप कहना चाहते हैं कि हमारी शादीशुदा जिंदगी बस आपकी एक वाक्य से खत्म हो गई ?... जिस तरह पेट को भूख लगती है, कभी जिस्म को भी पैसे की भूख महसूस होती है। वैसे पेट की भूख शांत करने के तो कई तरीके हैं मगर जिस्म।"....[1]

Copyright © The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

कबीर के माध्यम से लेखक ने भारतीय पुरुष के मानसिकता का वर्णन किया है। हमारे समाज में ज्यादातर परिवारों ने पुरुष की उम्र स्त्री की उम्र से लगभग 10–15 वर्ष बड़ी होती है। समाज की मानसिकता होती है कि पुरुष कभी बूढ़ा नहीं होता। सेक्स की संतुष्टि का अधिकार केवल पुरुषों का होता है स्त्री का नहीं। परिवार के सदस्य कभी भी स्त्री की मनोदशा को समझने का प्रयास ही नहीं करते। रीमा के माध्यम से लेखक ने भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति यथार्थ चित्रण किया है ।

लेखक सेक्स के माध्यम से स्त्री की आर्थिक स्थिति का चित्रण करने में पीछे नहीं हटते ''क्या भक्त हो तुम? इस तरह का गंदा इल्जाम लगा दिया मुझ पर ।इतना बेहूदाबात तुम कैसे कह गई ?... "और कबीर के गुस्से ने रीमा को दहला दिया। मगर सीमा अपने पति को खोना नहीं चाहती थी ।सब सुनती रही। शायद कहीं यह डर भी था कि शायद उसे घर से निकल ही ना दे । आर्थिक स्तर पर कबीर पर ही आश्रित थी। यदि महिला आर्थिक रूप से स्वतंत्र ना हो तो भला अपने मन की बात कैसे कह सकती है।[2]

कबीर के माध्यम से कहानीकार ने पुरुष मानसिकता का चित्रण किया है। पुरुष पूरी रात घर वापस ना आए तो कोई फर्क नहीं पड़ता वह अपनी मर्जी से जब चाहे जहां आए जाए कोई बात नहीं आखिर पुरुष है ।घर का सारे खर्चे जो वह उठाता है। पत्नी का यह अधिकार नहीं कि वह उसे सारे घर का दरवाजा रात भर बंद करके उसे सबक सिखाए । लेकिन अगर पत्नी को घर आने में जरा सी देर भी हो जाए तो पुरुष का अहम जाग उठता है ।सबक सिखाना जैसे उसके पुरुषत्व में आता हो ।लेखक कहता है "और कबीर उसी दिन कुछ जल्दी घर लौट आया। उसकी तबीयत कुछ खराब हो गई थी। हल्का–हल्का बुखार महसूस हो रहा था ।घर में घूमता रहा फिर घर के भीतर से अच्छी तरह दरवाज़े बंद करके सो गया ।जब रीमा वापस आई तो दरवाजा खुला ही नहीं क्योंकि बच्चे ऊपर अपने बेडरूम में बेखबर सो रहे थे। और कबीर को तो अपनी पत्नी को गलत साबित करना था।... "आ गई हीरोइन हमारे घर की। मैं पूछता हूं कि मुझसे इजाजत लिए बिना तुम्हारे कदम घर से बाहर निकले तो कैसे निकले ।अब तुम्हारी इतनी हद हो गई है कि तुम मुझसे बिना पूछे बाहर घूमने लगी हो ....तुम्हारी इतनी हिम्मत कैसे हुई।" [3]

विदेशी जमीन पर जाने के बाद भी भारतीय पुरुष मानसिकता किस प्रकार स्त्री पर हावी होती है इसका बखूबी चित्रण लेखक ने कबीर और रीमा के माध्यम से किया है। स्त्री अगर देर से घर वापस आ जाए तो उसे विभिन्न प्रकार से प्रताड़ित किया जाता है । घर का दरवाजा बंद कर दिया जाता है और उस पर पर व्यंग किया जाता है । यह दिखाने का प्रयास किया जाता है कि तुम्हारी अपनी कोई स्वतंत्रता नहीं है जो कुछ भी है पुरुष की दी हुई है ।जरा सा भी तुम सीमा रेखा लांघने की कोशिश करोगी तुम्हें तुम्हारी जमीन दिखा दी जाएगी। पुरुष मानसिकता को तार– तार कर देने वाली इस सच्चाई को लेखक ने यथार्थ के धरातल पर जाकर किया है । ऐसे पुरुष मानसिकता को लेखक ने कबीर के माध्यम से हमारे सामने प्रस्तुत किया है जिसका सामना ज्यादातर औरतें को करना पड़ता है। "तुम्हारी भाभी के खजाने देख कितने बड़े हैं ।कबीर की आंखों की गंदीकी उसके होठों पर टपक रही थी शर्म की महर्षि मां बस चुप साथ कर रह गई।[4] कबीर के माध्यम से लेखक ने ज्यादातर पुरुषों की मानसिकता का बयान किया है जो स्त्री के कुछ खास भागों पर इस तरह की सोच रखते हुए उन पर कटाक्ष करते हैं।

तेजेंद्र शर्मा ने आत्म और परिवेश के द्वंद्व का चित्रण अपने पात्रों के माध्यम से बखूबी किया है । सीमा कोशिश करती है कि समाज के द्वारा सिखाई हुई संस्कृति का पालन करें। लेकिन ''उस दिन पहली बार सीमा ने कबीर के साथ सोने से इनकार कर दिया और वहीं आकर बैठ गई जहां थोड़ी देर पहले कबीर बैठकर धूप किनारे का आनंद ले रहा था। उसे गुस्से के मारे कै आ रही थी। आज उसे जी भर कर अपने माता–पिता को कोसा जिन्होंने अच्छी नौकरी अमीर घर और बिरादरी से उसकी शादी कर दी थी। अगर वह गरीब होती और पति का प्यार मिलता तो वह क्या अधिक खुश न होती।" [5] परिवार की जिम्मेदारी और पति को खुश करने के सिवाय स्त्री के पास उसकी अपनी कोई और इच्छा नहीं होती ।पैसों के आधार पर सारी खुशियां नहीं प्राप्त की जा सकती है । सीमा के माध्यम से लेखक ने इसका मार्मिक में चित्रण किया है। औरत को भी शरीर की प्यास होती है । सिर्फ

पुरुष को ही शरीर की भूख नहीं होती लेकिन पुरुष मानसिकता से ग्रस्त हमारा समाज और परिवेश तथा परिवार इस तरह से बने होते हैं कि जहां आदमी को ही खुलकर सेक्स करने का अधिकार, उसके बारे में बोलने का अधिकार और अपने भूख मिटाने का अधिकार है स्त्री को नहीं । लेखक ने बनी बनाई धारणाओं को एकदम तोड़ दिया हैं। लेखक अपने पात्र रीमा के माध्यम से एक नए आयाम को जन्म देता है । एक बलात्कारी के माध्यम से उसे सेक्स की पूर्ण आनंद की अनुभूति होती है । रीमा की गर्माहट अब पिघलने लगी थी। पूरी तरह गीली हो चुकी रीमा अब उस चोर को अपने अंदर महसूस कर रही थी। एक बलात्कार की तरह शुरू हुआ अब आनंददाई ऋतिक्रिया में परिवर्तन हो गया था ।लगभग एक दशक के बाद रीमा को सेक्स का सुख मिल रहा था और वह उसका पूरा आनंद उठा रही थी। रीमा के सुख से परिपूर्ण शिश्किर्यों के अलावा वातावरण में और कोई आवाज नहीं सुनाई दे रही थी।"..... [6]

कल फिर आना कहानी का लोगों ने खूब विरोध किया कि ये कैसे हो सकता है कि कोई स्त्री अपने ही बलात्कारी से प्रेम करने लगे और उसे फिर से आने का आग्रह करे ।लेकिन अगर पूरी कहानी पर विचार किया जाए तो लेखक ने सेक्स के माध्यम से यथार्थ का चित्रण किया है बलात्कारी बलात्कारी न रहकर रीमा को सुख पहुंचाने वाला पुरुष है। सुख की कल्पना अपने पति से करती है लेकिन सेक्स का सुख बलात्कारी से मिलता है और वह अपने आत्म संतुष्टि के लिए उससे फिर से आने का आग्रह करती है।

तेजिंदर शर्मा 'इंतजाम ' कहानी के माध्यम से जीवन के महत्वपूर्ण विषय को फिर से सोचने पर मजबूर करते हैं। जिस सच्चाई से लोग पीछे भागते हैं लेखक इस सच्चाई को बहुत ही शिद्दत के साथ हमारे सामने प्रस्तुत करता है । वह स्त्री और पुरुष के बीच की खाई को पाटते हैं । वह जीवन के उस सत्य को उजागर करते हैं कि शरीर की भूख और प्यास केवल पुरुष को ही नहीं होती स्त्री को भी होती है। समाज की बनावट के कारण पुरुष खुलकर इसका आनंद लेता है और स्त्री के पास केवल आता है लज्जा ।समाज की बुनावट के कारण स्त्री खुलकर इसका आनंद नहीं ले पाती है ।अगर कोई स्त्री इस तरह के बात करती है तो उसे बदचलन आदि की संज्ञा देकर उसे चुप करा दिया जाता है। उसे पुरुष पर ही एकतरफ़ा आश्रित रहना पड़ता है ।

इंतजाम कहानी में लेखक मां के दायित्व को भी व्यक्त करता है। मां और बच्चे का जो संबंध है उसे लेखक चित्रित करते हुए कहता है की मां से बच्चे का कोई भी दर्द छुपा नहीं रह सकता चाहे वह सेक्स को लेकर ही क्यों ना हो" एलिसन का पीला होता चेहरा देखकर वह समझ रही थी कि उसकी पारिवारिक जिंदगी से एक चीज खत्म होती जा रही है। उसे रात को बिस्तर में सेक्स का सुख नहीं मिल रहा ।पीटर अपनी नई सहेली के साथ घर देर से आता है ।फिर भला मुटाती हुई एलिसन में उसे क्या दिलचस्प हो सकती है कहीं एलिसन भटक तो नहीं जाएगी भला कब तक इस बेइज्जती को सहती रहेगी। औरत के लिए बिस्तर में अनादर से अधिक दुखदाई भला क्या हो सकता है।" [7]

स्त्री पुरुष विमर्श को छेड़ते हुए तथा स्त्री को भी पुरुष के समान शरीर सुख की प्राप्ति की पश्चात करते हुए लेखक दिल के माध्यम से कहता है। यदि एलिसन को पति से शरीर का सुख नहीं मिलता तो क्या उसे बाहर खोजने को भटकना कह सकते हैं ? अपनी पत्नी के मोटा होने के कारण बाहर सेक्स खोजना तो जायज है मगर एलिसन क्या करें नही वह अपनी बेटी को सुबक कर नही जीने देगी।

स्त्री का अपना भी स्वाभिमान होता है अपनी इच्छा अनुसार अपने सुख की प्राप्ति के लिए खुद निर्णय लेने का अधिकार होता है "एक बार बिस्तर में निराधार होने के बाद जील ने कभी अपने पति को अपने शरीर के निकट नहीं आने दिया अब तुम्हें बचा ही क्या है? यू बोर मि जिल --- तुम अब मुझे कोई उम्मीद ना किया करो । मुझे अपनी जिंदगी जीने दो और तुम अपना कुछ इंतजाम कर लो ।मुझे कोई दिक्कत नहीं होगी।" [8]

आगे पीटर कहता है 'तुमने उसे कुत्तिया से इश्क लड़ाते हुए मुझसे इजाजत मांगी थी ।क्या बेडरूम मेरा भी है ।अगर तुम्हें पसंद नहीं तो लिविंग रूम में सो जाया करो या फिर जाकर उस कुतीया के साथ ही बस जाओ ।अब मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता

।जील के साथ में अचानक जेल में एक अजीब से किस्म का आत्मविश्वास पैदा कर दिया था। टेरेंस को अपना ही बेडरूम पराया सा लग रहा था।" दो अजनबी एक ही बिस्तर पर लेटे हुए थे । जिल और जेम्स के माध्यम से लेखक ने यह चित्रित करने का प्रयास किया है कि रतिक्रिया पुरुष के लिए ही नहीं महत्वपूर्ण होती बल्कि स्त्री के लिए भी होती है ।इस बात को हमारा पुरुष समाज समझता ही नहीं और नहीं समझने का प्रयास करता है।" जिल सच तो यह है कि दुनिया भर में बहुत कम पुरुष इस बात से परिचित है कि रति क्रीड़ा में महिला भी नहीं किसी तरह की खुशी महसूस करती है उन्हें लगता है की चरम स्थिति तक केवल पुरुष पहुंच सकता है। यदि पुरुष एक बार तक कर ले कि उसे अपनी पत्नी से खुश कभी ख्याल रखना है तो शायद पत्नी को हर बार खुश का एहसास होने लगे।" [9]

अत: हम कह सकते है की प्रवासी लेखक अपनी कहानियों में विभिन्न तरह की समस्याओं को उजागर करते हैं चाहे सेक्स की समस्या और चाहे किसी बच्चे की मां स्थिति हो चाहे बुजुर्ग की समस्या हो चाहे पति द्वारा पत्नी की अवहेलना हो या पति पत्नी द्वारा पति की अवहेलना हो । नए और पुरानी पीढ़ी की तकरार तथा शादी से पहले बनाए गए संबंधों पर बहस हो ।इन विषयों पर प्रवासी लेखकों ने अपनी लेखनी चलाई है।

'तीन बेटों वाली मां' कहानी में कहानीकार अनिल प्रभा ने बुजुर्गों की समस्या को बहुत ही मालूम तरीके से प्रस्तुत किया है। जहां पर बहू द्वारा वह बार-बार उपेक्षित होती है अंत में जब अपने बेटे का घर छोड़ती है तो कहती है असल में मैं आज विधवा हुई हूं।

'रोड टेस्ट' कहानी में डॉक्टर इला प्रसाद में कहानी को एक नए रूप में प्रस्तुत किया है। जहां लेखिका ने यह बताया है कि विदेशों में गाड़ी चलाने आना कितना जरूरी है गाड़ी ना सिख पाने के कारण बार-बार अपने पति से डाँट पड़ती है । सारांश यह है कि प्रवासी लेखक स्त्री पुरुष संबंधों को लेकर ज़्यादा सचेत हैं । संभोग तिरस्कार का विषय नहीं बल्कि समानता का विषय है जिसका कि भारतीय समाज में अनादर किया जाता है ।

संदर्भ ग्रंथ

1. पेज 103 दीवार में रास्ता, तेजेंद्र शर्मा
2. पेज 105 दीवार में रास्ता, तेजेंद्र शर्मा
3. पेज 105-106 दीवार में रास्ता, तेजेंद्र शर्मा
4. पेज 107 दीवार में रास्ता, तेजेंद्र शर्मा
5.पेज 110 दीवार में रास्ता, तेजेंद्र शर्मा
5. पेज 114-115 दीवार में रास्ता, तेजेंद्र शर्मा
6.पेज 150 दीवार में रास्ता, तेजेंद्र शर्मा
7. पेज 150 इंतजाम, तेजेंद्र शर्मा
8. पेज 150 वही, तेजेंद्र शर्मा
9. पेज 151वही, तेजेंद्र शर्मा